विश्वविद्यालय का परिचय :

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर की स्थापना छत्तीसगढ़ शासन के अधिनियम क्र. 26/2004 द्वारा की गई है। विश्वविद्यालय का नाम स्वतंत्रता सेनानी, अहिंसावादी, समता एवं सामाजिक न्याय के युगपुरुष एवं छत्तीसगढ़ के गाँधी के नाम से सुविख्यात पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (1881-1940 ई.) जी के नाम पर है। यह एक शासकीय राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है, जिसका कार्यक्षेत्र संपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य है। विश्वविद्यालय का मुख्यालय बिलासपुर, छह क्षेत्रिय-केंद्र-रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, अम्बिकापुर, जशपुर, जगदलपुर, तथा एक उप-क्षेत्रिय कार्यालय कांकेर है। विश्वविद्यालय के संपूर्ण छत्तीसगढ़ में 138 अध्ययन-केंद्र संचालित हैं जिनमें वनांचल बस्तर (अबूझमाड़) सरगुजा, जशपुर जैसे दूरस्थ आदिवासी क्षेत्रों के विद्यार्थी भी अध्ययनरत् हैं। विश्वविद्यालय इन केंद्रों के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के आधार पर गुणवत्तायुक्त उच्च-शिक्षा प्रदान कर रहा है।

बिलासपुर :

यह राज्य का दूसरा सबसे बड़ा शहर है, यहाँ छत्तीसगढ़ राज्य का उच्च न्यायालय है। इसे न्याय और संस्कारधानी के नाम से भी जाना जाता है। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे का मुख्यालय बिलासपुर में है। शिष्टाचार और आतिथ्य के लिये तत्पर इस समृद्ध शहर की ऐतिहासिक, सांसकृतिक, आध्यात्मिक, और प्राकृतिक सुंदरता की अनुपम छटा देखने लायक है।

पर्यटन स्थल :

- रतनपुर (माँ महामाया मंदिर) 26 कि.मी.।
- तालागाँव (प्राचीन अेवरानी- जेठानी मंदिर) 40 कि.मी.।
- मल्हार (पातालेश्वर, डिंडेनेश्वरी मंदिर) 40 कि.मी.।
- चैतुरगढ़ (छत्तीसगढ़ का कश्मीर) 65 कि.मी.।
- गिरौदपुरी (संत गुरुघासीदास की जन्मस्थली) जैत खांभ (कुतुब मीनार से ऊँचा) 62 कि.मी.।

पहुँच मार्ग :

- **सडक/रेल:** बिलासपुर, रेल/सडक मार्ग से जुडा हुआ। मुंबई-नागपुर-हावडा रेल मार्ग पर स्थित है, समीप ही रेल्वे स्टेशन उस्लापुर भी है।
- **हवाई मार्ग:** निकटतम हवाई अड्डा (बिलासा देवी केंवट हवाई अड्डा) चकरभाटा, बिलासपुर।
  निकटतम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा (स्वामी विवेकानंद हवाई अड्डा) रायपुर है जिसकी बिलासपुर से दूरी 125 कि.मी. है।

कार्यशाला के विषय में :

भारतीय भाषाएँ और लिपियाँ तकनीकी दृष्टि से सुसंपन्न है। भारतीय भाषाएँ तकनीकी विषयों-चिकित्सा, अभियांत्रिकी, अंतरिक्षविज्ञान, खगोलविज्ञान इत्यादि अनेक क्षेत्रों में प्रयुक्त हो रही हैं। भारतीय भाषाएँ तकनीकी उन्नति के समनान्तर लोगों के दैनिक जीवन के सुचारु संचालन के लिए सरल, सहज और ग्राह्य भाषाएँ हैं, इनमें शोध एवं अकादमिक-लेखन की अपार संभावनाएँ हैं। विश्व में हिंदी सहित भारतीय भाषाओं को बोलने-समझने-लिखने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही हैं, आशा की जानी चाहिए कि भविष्य में हिंदी विश्वभाषा बनेगी। हमारे संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं (असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, मैथिली, संथाली, डोगरी, और बोडो) सहित अन्य क्षेत्रीय बोलियाँ प्रचलित हैं, जो जनसामान्य के संप्रेषण का प्रमुख माध्यम हैं।

भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन के विस्तार के लिए हमें भाषा के दो पक्षों पर ध्यान देना होगा, पहला भारत में प्रचलित भाषाओं की पहचान करना, क्योंकि बहुसंख्यकों की मातृभाषाएँ यही हैं, जिनका शोध एवं अकादमिक क्षेत्र में उपयोग अपेक्षित है। दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है भारतीय भाषाओं का तकनीकी विकास। मानव विकास के साथ भाषाओं के प्रयोग का स्परूप बदला है, साथ ही शिक्षण और अनुसंधान की परंपरागत पद्धतियाँ भी बदली हैं। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान एवं उन्नत तकनीकी से शैक्षणिक, अकादमिक तथा अनुसंधान के कार्यों में भारतीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ा है, लेकिन उतना नहीं, जितना कि अपेक्षा की जा रही थी। भारतीय भाषाओं हिंदी, मराठी, तमिल, तेलगु, मलयालम, कश्मीरी, उड़िया, बंगाली, छत्तीसगढ़ी जैसी अनेक भाषाओं और विश्व की अन्य भाषाओं अँग्रेज़ी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, मदारिन आदि के बीच तकनीकी स्तर पर अनुवाद की समस्याएँ अभी भी बनी हुई हैं। इन संमस्याओं का समाधान आवश्यक है, ताकि कृषि, चिकित्सा, अभियांत्रिकी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों पर शोध और अकादमिक-लेखन को बढ़ावा मिल सके।

जब हम विषय विशेष (Purticaular Subject) जैसे- चिकित्सा, अभियांत्रिकी, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन सहित अन्य विज्ञान के विषयों पर शोध एवं अकादमिक-लेखन की बात करते हैं, तो अंतरराष्ट्रीय भाषा अँग्रेज़ी, फ्रेंच, जर्मन जैसी भाषाओं में हो रहे शोध से एक सीमा तक पिछड़ते दिखायी देते हैं। नवीन शोध का भारतीय जनमानस तक नही पहुँच पाने के पीछे एक कारण नवीन शोधों का भारतीय भाषाओं में लेखन नहीं होना भी है। नई शिक्षा नीति 2020 की मूल भावना के अनुरूप यह आशा की जानी चाहिए कि भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन से अधिसंख्यकों को नवीन अनुसंधान से प्राप्त लाभ आसानी से मिल सकेंगे। भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन से हम अपनी भारतीय भाषाओं को समोन्नत बनाने के साथ-साथ समाज और राष्ट्र को सुदृढ़, समृद्ध बनाने के महान लक्ष्य को पा सकेंगे।

कार्यशाला का उद्देश्य :

भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन विषय पर प्रस्तावित यह तीन दिवसीय राष्ट्रीय-कार्यशाला में हिंदी तथा अन्य भाषाओं में अनुसंधान एवं अकादमिक-लेखन के वैज्ञानिक तथा तकनीकी पक्षों पर सारगर्भित व्याख्यान/शोध-पत्र/आलेख-वाचन तथा चर्चा-परिचर्चा से भारतीय भाषाओं के उन्नयन को नई दिशा मिलेगी। अनुसंधान एवं अकादमिक क्षेत्र में हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ सकेगा।

प्रस्तावित विषय वस्तु :

- भारतीय भाषाओं की सांस्कृतिक विरासत तथा वर्तमान स्वरूप।
- भारतीय भाषाओं पर अनुसंधान, प्रयोग और विस्तार।
- भारतीय भाषाओ का तकनीकी विकास : सूचना प्रौद्योगिकी और अनुसंधान-लेखन।
- भारतीय भाषाओं में अकादमिक संसाधनों की उपलब्धता।
- भारतीय भाषाओं में कृषि-अनुसंधान और आम जन तक पहुँच।
- भारतीय भाषाओं में चिकित्सा अनुसंधान-लेखन की संभानाएँ।
- भारतीय भाषाओं में अभियांत्रिकी अनुसंधन-लेखन का विस्तार।
- भारतीय भाषाएँ और अनुवाद संपदा।
- भारतीय भाषाओं का मनोविज्ञान और वैज्ञानिक विषयों पर अकादमिक-लेखन की संभावनाएँ।
- नई शिक्षानीति 2020 और भारतीय भाषाओं के विकास का मूलभाव।
- हिंदी में तकनीकी शब्दावली उपलब्धता और प्रयोग की समस्याएँ।
- मूल विषय से संबंधित अन्य विषय।

शोध-पत्र/आलेख/पंजीयन :

इच्छुक प्रतिभागी अपना शोध-पत्र/आलेख सारांश हिंदी में (Kurti Dev 010 Font Size-14) 300 शब्दों में seminarchdhindi2017@gmail.com 10 फरवरी 2023 तथा पूर्ण शोध-पत्र/आलेख 11 फरवरी 2023 सायं 5:30 बजे तक भेजें। 11 फरवरी पश्चात प्राप्त शोध-पत्र/आलेख पर विचार नहीं किया जाएगा। प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे शोध-पत्र/आलेख प्रेषण की सूचना डॉ. अनिता सिंह दूरभाष 9827118808 को एसएमएस पर अनिवार्यतः देवें। शोध-पत्र/आलेख मौलिक होना चाहिए। पंजीकृत (निःशुल्क चयनित) 50 प्रतिभागियों की अंतिम सूची 11 फरवरी 2023 को रात्रि 11.59 बजे तक जारी की जाएगी।

परामर्शदाता

डॉ. के. एल. वर्मा

कुलपति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर
पूर्व अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग,
निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय
मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

पंजीयन-प्रपत्र

शोधार्थी पंजीकरण के लिए पंजीयन प्रपत्र गुगुल फॉर्म https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSculQITEZeeLtU181tDrw5BBx2LTu9xlh1IBMXggU7H9eyz7w/viewform?usp=sf_link या हार्ड कॉपी साईड www.pssou.ac.in से डॉउनलोड कर सकते हैं। पंजीयन-प्रपत्र की छायाप्रति का उपयोग भी किया जा सकता है, भरा हुआ पंजीयन-प्रपत्र पंजीयनकर्ता के पास अनिवार्यतः जमा करें।

पंजीयन निःशुल्क है।

- कृषि, अभियांत्रिकी, चिकित्सा, प्रबंधन तथा विज्ञान के अन्य विषयों के प्रतिभागियों (शोधार्थियों) को पंजीयन में प्राथमिकता दी जाएगी।
- पंजीकृत प्रतिभागियों की तीन दिवस (कार्यशाला अवधि) उपस्थिति अनिवार्य है।
- प्रत्येक पंजीकृत प्रतिभागी को पैड, पेन कार्यक्रम अनुसूची तथा तीन दिवस दोपहर का भोजन निःशुल्क उपलब्ध कराया जाएगा।
- पंजीयन प्रतिभागियों को यात्रा-व्यय देय नहीं होगा, आवास सशुल्क उपलब्ध कराया जा सकेगा।
- प्रमाण-पत्र पंजीकृत प्रतिभागियों को ही प्रदान किया जाएगा।

संरक्षक

डॉ. बंश गोपाल सिंह

कुलपति, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सह-संरक्षक

श्री चमु कृष्ण शास्त्री

अध्यक्ष, भारतीय भाषा समिति
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

डॉ. इन्दु अनंत

कुलसचिव, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़, बिलासपुर

आयोजक समिति

डॉ. शोभित वाजपेयी	- 9425230007
डॉ. बीना सिंह	- 7898484846
डॉ. प्रकृति जेम्स	- 9993450848
डॉ. प्रीती रानी मिश्रा	- 7898484846
डॉ. रेशम लाल प्रधान	- 7898484846
डॉ. संजीव कुमार लवनियाँ	- 7898484846
डॉ. एस. रूपेन्द्र राव	- 7898484846
डॉ. पुष्कर दुबे	- 7898484846
डॉ. मोरध्वज त्रिपाठी	- 9425543083
डॉ. वर्षा शशिनाथ	- 7000475114
श्री प्रवीण टोप्पो	- 7748014451

प्रति,

_____

_____

_____

तीन दिवसीय

राष्ट्रीय-कार्यशाला

13-15 फरवरी, 2023

भारतीय भाषाओं में शोध एवं अकादमिक-लेखन

भारतीय भाषा समिति

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

तथा

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर के संयुक्त तत्वावधान में

आयोजक

हिंदी-विभाग

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

संयोजक

डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
विभागाध्यक्ष, हिंदी
मोबा.9229703055

सह-संयोजक

डॉ. अनिता सिंह
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
मोबा. 9827118808